बौना कालानमक (एसएल–03)
कृषि कुंभ (मई 2023),
खण्ड 02 भाग 12, पृष्ठ संख्या 57–58

बौना कालानमक (एसएल–03) धान की उन्नत किस्म

सनोज कुमार[1], डॉ० बैजनाथ सिंह[2], शशि कान्त[3], राम लला पटेल[4] एवं राजेश कुमार[5]

[1, 5]एम०एस ०सी० कृषि (अनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग), दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर,
[2]चेयरमन आफ सेंटर फार रीसर्च एंड डवलपमेंट, गोरखपुर
[3]शोध छात्र (आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग), चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर
[4]एम०एस ०सी० कृषि (अनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग), बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

Email: patelramlalapatel@gmail.com

उत्तरी–पूर्वी उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर, देवीपाटन तथा गोरखपुर जिलों के आसपास कभी सुगंधित चावल कालानमक की खेती की जाती थी। किन्तु पौधों की ऊंचाई लम्बी होने के नाते पौधा पकने के करीब गिर जाता है, और हाथ से कटाई करने पर इसकी खेती में लागत बढ़ जाती है।

ऐसा अनुमान है कि 20 साल पहले इसकी खेती करीब 50 हजार हैक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती थी जो अब घटकर 2000 हैक्टेयर रह गयी है। बौनी किस्मों के विकास का कार्यक्रम पूसा संस्थान, नई दिल्ली में 2009 में शुरू हुआ और कुछ बौनी किस्मों का परीक्षण 2015 से अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, गोरखपुर में शुरू हुआ। विगत वर्षों में उन्नत किस्मों का चुनाव कर बौनी किस्म एसएल–03 जो सुगंधित भी है, का चयन किया गया है और किसान के खेतों में परीक्षण जारी है. यह किस्म पुरानी परम्परागत किस्मों से करीब 15 से 20 दिन पहले पक जाती है।

- यह एक बौनी 100 सेमी. ऊँचाई की कालानमक से संकरण कर विकसित किस्म है, जो गिरती नहीं है।
- यह एक प्रकाश संवेदी किस्म है, जिसकी बाँलिया 10 से 15 अक्टूबर के बीच निकलती हैं और एक माह बाद मध्य नवम्बर तक काटने योग्य हो जाता है।

नर्सरी उगाना :

- इसकी पौधशाला में बुवाई जून के तीसरे सप्ताह में की जानी चाहिए।
- अंकुरण के लिये बीज को 12 घंटे पानी में भिगोकर, अगले 24 घंटे के लिये गीले बोरे से ढककर तथा अंकुरित करके लेवा (कदवा) किये गये खेत में समान रूप से बिखेर दें।
- यदि घर का अपना बीज है तो 10% (100 ग्राम प्रति लीटर पानी) नमक के घोल में छानकर खखरा बीज निकाल दें। फिर साफ पानी में घोल कर छान लें।
- इसे सिंचित मध्यम जमीन में रोपाई विधि द्वारा खेती किया जाये।
- इसका चावल छोटा पतला है और सुगंधित है।
- इसकी बुवाई से लेकर कटाई की अवधि 145 दिन है।
- पौधशाला में नर्सरी उगाने हेतु 40 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से करीब 250 वर्ग मीटर (छः डिस्मिल) में लेवा किये गये खेत में अंकुरित बीज को बोयें। एक एकड़ में 10 किलोग्राम बीज पर्याप्त हैं।
- 250 वर्गमीटर नर्सरी क्षेत्र में 10 क्वींटल गोबर की सड़ी खाद या 2 क्वींटल वर्मीकम्पोस्ट जुताई के पहले डाले। अंकुरित बीज बिखेरने के पहले दस किलो एन. पी. के. खाद (12:32:16 या 15:15:15 या

10:26:26) डाले। एन. पी. के. खाद नहीं मिलने पर 8 किलो डी. ऐ. पी. के साथ 2 किलो म्यूरेट आफ पोटास डालकर फिर बीज बिखेरे।

- बीज को कार्बेन्डाजीम (50wp) से 2 ग्राम प्रति किलो बीज दर से उपचारित कर बोये.

खेत की तैयारी :

वर्षा होने पर मुख्य खेत में मिट्टी पलटने वाले हल या कल्टीवेटर से अप्रैल या मई माह में जुताई कर खुला छोड़ दे तथा पाटा न चलायें।

खाद की मात्रा :

एक एकड़ या रोपाई वाले खेत में कुल 40:20:20 किलो नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटास की दर से प्रयोग करे। जिंक, गंधक तथा फेरस सल्फेट 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से इन तत्वों की कमी वाले क्षेत्रों में प्रयोग करें। सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करने पर गंधक न डाले।

ढैंचा हरी खाद की बुवाई भी कर सकते है जिसके लिये 50 किलो छच्छ या डी. ऐ. पी. प्रति एकड़ खाद, बोने के समय अवश्य दे. रोपाई वाले खेत में 100 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से एन. पी. के. खाद (12:32:16 या 15:15:15 या 10:26:26) या 50 किलो डी. ऐ. पी. लेवा लगाने के बाद तथा रोपाई से पूर्व खेत में बिखेर दें. हरी खाद वाले खेत में 50 किलो एन. पी. के. या डी. ऐ. पी. (18एनः 46पी) खाद रोपाई के समय खेत में डाले।

खरपतवार नियंत्रण :

रोपाई के 20–25 दिन बाद खेत में घास होने पर बिस्पाईरीबैक सोडियम (नामिनी गोल्ड) दवा की 100 उस या पायरोजोसल्फ्यूरान 10 WP (साथी) का 80 उस प्रति एकड़ की दर से 120 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करे। खेत में नमी न होने पर दवा प्रयोग करने के बाद सिंचाई अवश्य करें। दवा को 8 लीटर पानी में घोलकर स्टाक धोल बना लें। फिर एक लीटर स्टाक सालूसन को 15 लीटर वाली छिड़काव मशीन में मिलाकर छिड़काव करें।

उपरिवेशन :

- नाइट्रोजन की शेष मात्रा रोपाई के 30 तथा 60 दिन बाद, दो बार 30 किलो प्रति एकड़ यूरिया द्वारा उपरिवेशन (टापड्रेसिंग) करें, प्रथम उपरिवेशन में यूरिया के साथ 10 किलो प्रति एकड़ की दर से सागरिका मिलायें।
- दो सप्ताह तक वर्षा न होने पर रोपाई वाले खेत में सिचाई अवश्य करें।

कीट प्रबन्धन :

कीड़ों की रोकथाम के लिये मोनोक्रोटोफास 36 EC का 600 उस या क्लोरपाइरीफास 20 EC का एक लीटर प्रति एकड़ की दर लीटर पानी में घोल कर तना छेदक या साढ़ा कीट, टिड्डा या पत्र लपेटक के रोकथाम के लिये प्रयोग करें।

रोग प्रबन्धन :

कवक जनित रोगों के लिये कार्बेन्डाजीम (50 wp) 0.1% घोल (1 उस प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें. शीथ ब्लाईट के लिये हेक्साकोनाजोल दवा का 0.2% (2उस प्रति लीटर पानी) की दर से छिड़काव करें. लेढ़ा या हरदा रोग (False Smut) की रोकथाम के लिये प्रोपिकोनाजोल का 0.25% (2.5उस प्रति लीटर पानी) घोल बालियों के गाभा के समय, तथा दुबारा 15 दिन बाद छिड़काव करें।

बोरान व पोटास का छिड़काव :

बालियों में दाना भरने वक्त, बोरान तथा पोटास दोनों को मिलाकर छिड़काव करें. इससे धान में खखरापन कम होगा। टेट्राबोरेट जिसमें 20% बोरान होता है, उसका 30 ग्राम पाउडर, 15 लीटर वाली टंकी में मिलावें। एक एकड़ में 8 टंकी (120 लीटर) जल की आवश्यकता होती है जिसके लिये 250 ग्राम टेट्राबोरेट की आवश्यकता होगी, उसका स्टाक धोल पहले बना लें।

पोटास के छिड़काव के लिये 0:0:50 पाउडर फर्जीलाईजर का छः (6) ग्राम प्रति लीटर की दर 90 ग्राम प्रति टंकी (15 लीटर) में घोलकर बोरान के साथ मिलाकर छिड़काव कर सकते है. एक एकड़ के छिड़काव के लिये 750 ग्राम फर्टीलाईजर की आवश्यकता होती है। उसका स्टाक धोल पहले बनाकर छिड़काव के समय बोरान तथा पोटास टंकी में मिलावें।

उपज क्षमता :

एक एकड़ में 16 क्विंटल तक पैदावार ली जा सकती है।

अधिक जानकारी एवं बीज के लिये सम्पर्क करें

–

डॉ०बैजनाथ सिंह
अनुसंधान व विकास केन्द्र गोरखपुर उत्तर प्रदेश
मो0–8953655476
Email: gorakhpurcrd@gmail.com